بسم الله الرحمن الرحيم

# उमरा गाइड बराए ख़वातीन

(मुकम्मल रहनुमाई, अहादीस और हवाले के साथ)

UMRAPRO

Powered By

ALTITUDE JOURNEY LLP

UmraPro.com

Version 1.1

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

## ख़वातीन के लिए ख़ुसूसी हिदायात

1. तन्हा सफ़र न करें। महरम (खाविंद, बाप, भाई) के बग़ैर उमरा करना जाइज़ नहीं।
   कोई औरत महरम के बग़ैर सफ़र न करे ——— सही बुख़ारी: 1862, सही मुस्लिम: 1341
2. ख़वातीन आम पर्दे वाले कपड़ों में एहराम बांधें (मर्दों की तरह सफ़ेद कपड़े ज़रूरी नहीं)। वह नक़ाब और दस्ताने के अलावा बा-हया और सादा कपड़े पहन सकती है। ज़ेवरात या ख़ुशबू से परहेज़ करें।
   हदीस: हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:
   औरत न तो नक़ाब पहने और न ही दस्ताने, लेकिन एहराम की हालत में चेहरा और हाथों को कपड़े से ढांप सकती है ---सही बुख़ारी: 1838
3. एहराम की हालत में नक़ाब और दस्ताने पहनना मना है। चेहरा खुला रखें मगर बिला ज़रूरत नक़ाब न पहनें।
   नोट: औरत का एहराम चेहरा खुला रखने में है लेकिन फिर भी चेहरे का पर्दा करना होगा, आसानी हो तो कैप नुमा हैट सर पर रख ले और फिर उसके ऊपर नक़ाब डाल ले ताकि हैट की वजह से नक़ाब का कपड़ा चेहरे से न लगे तो ऐसी सूरत में अजनबी मर्द से पर्दा हासिल हो जाएगा। सफ़ा 14 पर तस्वीर देखें।
4. एहराम में ममनूअ उमूर: एहराम की हालत में ख़ुशबू लगाना, बाल या नाख़ुन काटना, निकाह करना, या शौहर से मुबाशरत करना ममनूअ है।
5. भीड़ वाले औक़ात से बचें। ख़वातीन हुजूम से दूर रहें — मर्दों के पीछे से तवाफ़ करें।
6. एहराम की हालत में फ़ुज़ूल गोई गुनाह है।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

7. अगर तवाफ़ के दौरान वुज़ू टूट जाए तो तवाफ़ छोड़ कर पहले वुज़ू करे और फिर तवाफ़ दुबारा से शुरू करे।
   तवाफ़ के लिए वुज़ू का होना ज़रूरी है। सई के लिए वुज़ू का होना ज़रूरी नहीं है।
   हदीस: तवाफ़ नमाज़ की मानिंद है, लेकिन इसमें बात करना जाइज़ है ——— तिर्मिज़ी: 96
8. अगर औरत ह़ैज़ या निफास की हालत में हो तो तवाफ़ और सई से परहेज़ करे। पाक होने के बाद ग़ुस्ल करे और तवाफ़ व सई मुकम्मल करे। एहराम की हालत में रहना जारी रखे।
9. ह़ैज़ की हालत में ख़वातीन हरम शरीफ़ में दाख़िल न हों। बाहर सहन में बैठी रहें।
10. ख़वातीन के लिए तवाफ़ में रमल और इज़्तिबा (तेज़ी से चलना या दाएं कंधा खोलना) नहीं होता।
11. अगर किसी ख़ातून को सफ़र में या सफ़र से पहले या मीक़ात पहुँचने से पहले ह़ैज़ (माहवारी) आ जाए और वो मक्का जाना चाहती हो, तो उस पर लाज़िम है कि वो हालत-ए-ह़ैज़ ही में एहराम बाँध ले। वो नियत करे, लब्बैक पढ़े, नफ़्ल नमाज़ न पढ़े और एहराम की तमाम पाबंदियों का लिहाज़ रखे। ह़ैज़ की हालत में एहराम बाँधना बिलकुल जायज़ है। नमाज़ पढ़ना, सई करना और तवाफ़ करना उस वक़्त जायज़ नहीं होता। जब वो मक्का पहुँचें तो अपने होटल में रहें और इंतज़ार करें कि वो ह़ैज़ से पाक हों। जिस दिन ह़ैज़ से पाक हो जाएँ ग़ुस्ल करें, तवाफ़ करके सई करें और बाल कटवाकर उमरा मुकम्मल करें।
12. उमरा मुकम्मल करने के बाद हुदूद-ए-हरम के अंदर ही बाल काटना ज़रूरी है। अगर कोई शख़्स हुदूद-ए-हरम से बाहर जाकर बाल काटेगा तो उस पर दम (क़ुर्बानी) वाजिब होगी।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

## उमरा की नियत और एहराम बांधने का तरीक़ा

नियत दिल के इरादे को कहते हैं लेकिन उमरा की नियत करते हुए ज़बान से अल्फ़ाज़ अदा करना ज़रूरी है। सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए उमरा की नियत करें।

**एहराम:** एहराम बांधने का तरीक़ा यह है कि ग़ुस्ल करें और फिर एहराम बांधे। औरत के लिए इजाज़त है कि वह किसी भी रंग का लिबास इस्तेमाल कर सकती है बशर्ते यह ज़ेब-ओ-ज़ीनत का इज़हार न हो।

एहराम बांधने से पहले की दुआ

اللَّهُمَّ إِنِّيْ أُرِيْدُ الْعُمْرَةَ فَيَسِّرْهَا لِيْ وَتَقَبَّلْهَا مِنِّيْ

**अल्लाहुम्मा इन्नी उरीदुल उमरता फ़ययस्सिरहा ली व तक़ब्बलहा मिन्नी**

या अल्लाह, मैं उमरा करने का इरादा रखती हूँ, तू मेरे लिए आसानियाँ पैदा फ़रमा और मुझसे क़बूल फ़रमा।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

इसके बाद, दो रकात सुन्नत-उल-एहराम पढ़ें। पहली रकात: सूरह अल-काफ़िरून | दूसरी रकात: सूरह अल-इख़लास
दो रकात सुन्नत-उल-एहराम पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़ें:

**लब्बैक अल्लाहुम्मा उमरह**

**दिल में नीयत करके तलबिया पढ़ें**

**हदीस:** रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "जिस ने तलबिया पुकारा, उसके लिए हर पत्थर, दरख़्त और ज़मीन गवाही देंगे।" —— — तिर्मिज़ी: 828

لَبَّيْكَ ٱللَّهُمَّ لَبَّيْكَ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ إِنَّ
ٱلْحَمْدَ وَٱلنِّعْمَةَ لَكَ وَٱلْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ

**लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैका ला शरीका लका लब्बैक, इन्नल हमदा वन्नीयमता लका वल-मुल्क, ला शरीका लक।**

मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह, मैं हाज़िर हूँ। आपका कोई शरीक नहीं है, मैं हाज़िर हूँ।
बेशक तमाम तारीफ़ें और नेमतें तेरी ही हैं और बादशाहत तेरी ही है। आपका कोई शरीक नहीं है।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

**बैतुल्लाह शरीफ़ में बाब उस्सलाम से दाख़िल होने की कोशिश करें और दाख़िल होते वक़्त बेहद ख़ुशू व ख़ुज़ू के साथ यह दुआ पढ़ें:**

أَعُوذُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِيمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

بِسْمِ اللَّهِ اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَسَلِّمْ

اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي ذُنُوبِي وَافْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ

**अ'ऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीमि वबिवज्हिहिल करीमि वसुल्तानिहिल क़दीमि मिनश्शैतानिर्रजीम**

**बिस्मिल्लाही, अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व आलीही व सल्लिम**

**अल्लाहुम्मग़्फ़िरली ज़ुनूबी वफ्तह ली अबवाबा रहमतिक**

मैं अज़मत व जलाल के मालिक अल्लाह, और उसकी करीम ज़ात और उसकी लाज़वाल सल्तनत की पनाह लेता हूँ शैतान मर्दूद से। अल्लाह के नाम के साथ (मैं दाख़िल होता हूँ)।

ऐ अल्लाह! तू मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आल-ए-मुहम्मद पर रहमतें और सलामती नाज़िल फ़रमा।

ऐ अल्लाह! मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा दे और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

**और जूंही बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र पड़े तो फ़ौरन यह दुआ पढ़े:**

اللَّهُمَّ زِدْ هَذَا الْبَيْتَ تَشْرِيفًا وَتَعْظِيمًا وَتَكْرِيمًا وَمَهَابَةً وَزِدْ مَنْ شَرَّفَهُ وَكَرَّمَهُ مِمَّنْ حَجَّهُ أَوِاعْتَمَرَهُ تَشْرِيفًا وَتَكْرِيمًا وَتَعْظِيمًا وَبِرًّا

**अल्लाहुम्मा ज़िद हाज़ल बैता तशरीफ़न व ताअज़ीमन व तकरीमन व महाबतन,**
**व ज़िद मन शर्रफहू व कर्रमहू मिम्मन हज्जहू अवि अ-तमरहु तशरीफ़न व तकरीमन व ताअज़ीमन व बिर्रा |**

ए अल्लाह इस घर के शरफ़, ताअज़ीम, इज़्ज़त और रौब में इज़ाफ़ा फ़रमा और जो इसे शरफ़ व इज़्ज़त बख़्शे, ईसका हज या उमरा करे, उसके शरफ़, इज़्ज़त, ताअज़ीम और नेकी में भी इज़ाफ़ा कर।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

**तवाफ़ का तरीक़ा:**

बैतुल्लाह शरीफ़ में दाख़िल होते ही सबसे पहले तवाफ़ करें।

हज्र-ए-असवद से आग़ाज़ करें, **बिस्मिल्लाही अल्लाहु अकबर** कहकर हज्र-ए-असवद को बोसा दें और फिर तवाफ़ शुरू करें। हज्र-ए-असवद को छूना ज़रूरी नहीं।

بِسْمِ اللَّهِ اَللَّهُ أَكْبَر

**बिस्मिल्लाही अल्लाहु अकबर**

जब चक्कर पूरा करके वापस हज्र-ए-असवद पर आए, तो यह एक चक्कर हुआ। इसी तरह सात चक्कर लगाएँ।

**तवाफ़ शुरू करते वक़्त ये दुआ पढ़ें:**

سُبْحَانَ اللَّهِ، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ، وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ، وَاللَّهُ أَكْبَرُ، وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ

**सुब्हानल्लाही , वल हम्दुलिल्लाही , व ला इलाहा इल्लल्लाहु , वल्लाहु अकबर, वला हौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाह**

पाक है अल्लाह और अल्लाह के लिए ही सब तारीफ़ें हैं और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अल्लाह ही सबसे बड़ा है और अल्लाह की मदद के बग़ैर हम न गुनाहों से बच सकते हैं और न ही नेकी कर सकते हैं

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

**रुक्न यमानी और हज्र-ए-असवद के दरमियान की दुआ:**

हर चक्कर में अल्लाह तआला का ज़िक्र करते रहें और जो चाहें दुआएँ माँगें लेकिन अफ़ज़ल ये है कि हर चक्कर को इस दुआ पर मुकम्मल करें।

رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ حَسَنَةً
وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ

**रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या हसनतन, व फ़िल आख़िरति हसनतन, व क़िन आज़ाबन्नार।**

ऐ परवरदिगार! तू हमें दुनिया में भी ख़ैर व खूबी दे और आख़िरत में भी ख़ैर व खूबी अता फ़रमा और हमें जहन्नुम की आग से बचा। ——— (अल बक़रा: 201)

**मक़ाम-ए-इब्राहीम:**

وَاتَّخِذُوا مِن مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى (سورة البقره)آيت 125

**वत्तख़िजू मिं मक़ामि इब्राहीमा मुसल्ला (सूरतुल बक़रा — आयत 125)**

और मक़ाम-ए-इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लो।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

जब तवाफ़ के सात चक्कर मुकम्मल हो जाएँ तो यह आयत शरीफ़ा की तिलावत करते हुए मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ (वाजिबुत्तवाफ़) की नीयत से पढ़ें। मक़ाम-ए-इब्राहीम के क़रीब जगह न मिल सके तो उस से भी दूर — यहाँ तक कि मस्जिद अल-हराम में मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे किसी भी जगह नमाज़ पढ़ सकते हैं। यह वो मुबारक मुक़ाम है जहाँ दुआएँ क़बूल होती हैं।

**पहली रकअत:** सूरह अल-काफ़िरून | **दूसरी रकअत:** सूरह अल-इख़लास

**हदीस:** रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हमेशा तवाफ़ के बाद ये दो रकअतें पढ़ीं। ——— सहीह मुस्लिम: 1218

**ज़मज़म पीना:**

क़िबला रुख हो कर ज़मज़म पिएँ: शिफ़ा, इल्म और रिज़्क़ की नीयत से दुआ करें

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَرِزْقًا وَاسِعًا وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ

**अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका इल्मन नाफ़िआ, व रिज़्क़न वासिआ, व शिफाअं मिन कुल्ली दा**

ऐ अल्लाह! मैं तुझ से नफ़ा बख़्श इल्म, कसरत रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा का सवाल करता हूँ।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

## सई: सफ़ा व मर्वा के दरमियान चलना

मक़ाम-ए-इब्राहीम पर दो रकअत नमाज़ अदा करने के बाद सई करने के लिए सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ जाएँ और ये आयात पढ़ें:

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ الله

**इन्नस्सफ़ा वल- मरवता मिन शआइरिल्लाह**

बेशक कोहे-सफा और मर्वा अल्लाह की निशानियों में से हैं।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

कोहे-सफ़ा पर चढ़ जाएँ, काबा शरीफ़ की तरफ़ रुख कर लें, तीन बार "अल्हम्दु लिल्लाह" और "अल्लाहु अकबर" पढ़ें और हाथ उठा कर ये दुआ तीन बार पढ़ें।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ
يُحْيِي وَيُمِيتُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

**ला इलाहा इल्लल्लाहु वह दहू ला शरीका लहु लहुल मुल्कु वलहुल हम्दु, व हुवा आला कुल्लि शैइन क़दीर।**

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, वो अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं। मुल्क उसी का है, सब तारीफ़ें भी उसी के लिए हैं। वही ज़िंदा करता है और वही मौत देता है वो हर चीज़ पर क़ादिर है।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الْأَحْزَابَ وَحْدَهُ

**ला इलाहा इल्लल्लाहु वह दहू, अंजज़ वअदहू, व नसरा अब्दहू व हज़मल अहज़ाब वह दह |**

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसने अपना वादा पूरा किया, और अपने बंदे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की मदद फ़रमाई, और उसी अकेले ने तमाम जमाअतों को शिकस्त दी।

ये दुआएँ तीन बार पढ़ने के बाद अपने लिए दुआएँ करें, अपने घर वालों के लिए दुआएँ करें, अपने वालिदैन के लिए दुआएँ करें।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

इस के बाद सफा पहाड़ी से नीचे उतर आएँ और मर्वा की तरफ़ चलें। जिस जगह सब्ज़ रंग के स्तंभ (लाइट्स) नज़र आएँ वहाँ भी मामूल की चाल से चलें (ख़वातीन को सब्ज़ लाइट्स के दरमियान दौड़ना नहीं होता) और मर्वा पहाड़ी पर चढ़ जाएँ और यहाँ भी अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान करते हुए उसी तरह करें जिस तरह सफा पर किया था। और अगर आसानी से मुमकिन हो तो सफा व मर्वा पर तमाम अज़कार और दुआओं को तीन-तीन बार पढ़ें — ये एक चक्कर मुकम्मल हुआ। इसी तरह सात चक्कर मुकम्मल कर लें — इससे सई मुकम्मल हो जाएगी।

याद रहे: तवाफ़ और सई के लिए कोई ऐसा मख़सूस ज़िक्र नहीं है जो वाजिब हो, बल्के हर वह ज़िक्र और दुआ जाइज़ है जिसे आप आसानी से कर सकें। तवाफ़ और सई करते हुए क़ुरआन मजीद की तिलावत भी कर सकते हैं।

हालाँकि इस मौके पर हर दुआ और ज़िक्र जाइज़ है लेकिन अफ़ज़ल यह है कि उसी ज़िक्र और दुआ पर इक्तिफ़ा किया जाए जो इस मौके पर हुज़ूर ﷺ से साबित है — और आपने ﷺ से जो ज़िक्र और दुआएँ साबित हैं, वह हम अभी-अभी बयान कर चुके हैं।

**हलक़ या क़स्र या बाल कटवाना**: ख़वातीन उंगली के पोर के बराबर बाल काटें — सर मुंडवाना सिर्फ़ मर्दों के लिए है।
**उम्रा के बाद** : नफ़्ल तवाफ़ कर सकती हैं। दुआ, ज़िक्र, इस्तिग़फ़ार में मशग़ुल रहें।
**उम्रा क्या है?** उम्रा बैतुल्लाह (काबा) की ज़ियारत का एक मुक़द्दस अमल है जो साल के किसी भी वक़्त किया जा सकता है। ये हज से छोटा है लेकिन इस्लाम में बहुत फ़ज़ीलत वाला अमल है।

All Rights Reserved by UmraPro.com Powered by ALTITUDE JOURNEY LLP

**मीक़ात:** मक्का मुक़र्रमा के चारों तरफ़ कुछ मुक़ामात का तअय्युन किया गया है जिनको **मीक़ात** कहते हैं। इन मुक़ामात से एहराम के बग़ैर आगे गुज़रना मना है।
हवाई जहाज़ से सफ़र की सूरत में अगर जहाज़ के अंदर एहराम बाँधना मुश्किल हो तो अपने घर से या एयरपोर्ट से ही एहराम बाँध सकते हैं।

**अहादीस की रौशनी में उम्रा की फ़ज़ीलत: "एक उम्रा दूसरे उम्रा के दरमियान गुनाहों का कफ़्फ़ारा है।"** — सहीह बुख़ारी: 1773, सहीह मुस्लिम: 1349
**हज़रत आयशा (रज़ि.अल्लाहु अन्हा) ने पूछा:** "क्या औरतों पर जिहाद फ़र्ज़ है?"
**नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया:** "हाँ, ऐसा जिहाद जिसमें जंग नहीं — वह है **हज और उम्रा।**"— सुन्नन इब्न माजाह: 2901

**Umrah / Hajj Cap for Women:**